

68

	1824
Rajkumar Mallik	

ASHA ARCHIVES

१० नमः ॥ अथ नाना यथा ॥ अथ नाना
गयक विधानं लिख्यते ॥

निश्चयानन्दवयं निश्चयानन्दगलत्यम्
नदल्लुः ॥ कमाद्यायं यनवत्रावत्त
कमिदं लयाथनूर्यं जगत् ॥ नदव
ययद्विभसूकतिनल्लेनयमन
ननकडायादनिर्णय ॥ नदसद
नवायामधीर्गमरु ॥ अथ नाना
नल्लेनयं खधवल्लयान्दल्लय
मारुजिभूदरुसुविधुलवकद
धतः ॥ सुगुणं खधकीनकीय
यावलोत्रील्लिसहिनीवृषसू
नार्कसिनीतमीर्गनमीर्गसुन
रुनिर्गनानाय ॥ ४ यावुव ॥
॥ ॥ तना ॥ ४ यी ॥ ४ यवर्चन ॥

तनागद्यार्गकालात्तनकथित
विधानं नदत्तागदनार्थसन्काः
याकर्मनिर्विधार्थवत् ॥

ननयोनीदीमुखमाट्टधद्वक
कुर्यात् ॥ ॥ अथार्गगलसिद्धार्थ
मारुधधवकावय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यजमानं यथागुकर्मसमाधि
तः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

यतत्काकार्ययवादकीं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दकविधिः ॥ ॥

तताग्निक्लुयादमूयनं ॥ ॥
यजमानस्यदुर्भनतारिक ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
विमखलायत्रियनिमदितनरुस
द्वययनिमित्तनाग्निक्लुक्कर्वी ॥ ॥
थाउलीर्गनाविननमल्लय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
धुर्यं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अथयुर्वस्मिन्निदिवस ॥ ॥ सर्वेषां व
नीनीद्वानकर्मसमानं विवस्मभक
रुर्क ॥ ॥ यवादकगतवृन्दसूनाद
यः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
याथीरुविषीर्गु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कनकर्ममालकासी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कर्ममालकासी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गतामलुविधिः ॥ ॥ वटादुम्बनमस्य
तुंयितर्कनात्रर्गकमा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
कदत्रीयानूयताकादगदिकुर्म
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वृत्तकमा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वृत्तलारुनिदकि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कानेमुखधूमकायाकेवाभूषाया
 धुलकथा। वायवांदाविनीवर्ण
 सोमयीतम(ध)रातवनीभामभु
 क्कुरावकेवसुसुनयकीकिरी॥
 रुविनीमधुविश्रीचयश्चवर्णकः
 दुर्दक॥ यगाका॥ लघ्वकवडसु
 दश्चवगवधुदलेविहयश्चय
 लवमेवसादाजयनेयनमनी॥
 यश्चयलव॥ ॥ यंनमुखीततश्च
 योद्धवितावधमयदी॥ धवनेक
 नकाकारंकुमानीककिनेयन॥
 ॥ यश्चमूर्ति॥ ॥ यंचयुगकाभल
 शयश्चयलवयश्चमूर्तिकाभल
 यश्चकतदाठलसेना॥ यकायका
 शरुस्नानकायजगयाउचम॥
 दिगयतावानायन॥ ॥ दिगमूर्ति
 नमाल॥ ॥ शका॥ कयकुमाय॥

ततश्चकलवाय॥ यीतसु(र्)नवा
 सदीसुनस्नानेयधकिरी॥ लिखि
 वायद्विधिवनयधुआजाश्चक
 यन॥ ॥ आधुनिकजातिविद
 रुवाकावथेकृ(र्)नी॥ कलन॥ ॥ य

धुलाकात्रा॥ यश्चवलाभसंयुता॥
 यगाकाचुसंयुकाआधुनायविमं
 मिगा॥ ॥ ठलनधुलसंयुधुनावेनूय
 (भ)रिता॥ चन्दने(धे)वसिंदूवेदृष्टि
 यक्षा॥ यवीतके॥ दियचुदसिसंयुक्त
 वर्मसेवगलयून॥ (भ)मयसंयुचे॥
 साक्षेद्वीकतमंयवीयसमालास
 मायकेवलिरुजावनादिकी॥ लारु
 मश्चिकताधुनिकम(ध)यविमि
 नी॥ सुवर्णनाजनेचकु॥ यश्चवने॥
 धयुविने॥ नानानेवद्यवसुनियू
 धीनुरिनवानिवाधुयदीयाकता
 दीनिसामग्रीविरुवायधुआकलन
 मधुलादिवलिउजावनादिकीसु
 नस्नानेनिथीजय॥ चन्दनसिंदूच
 यक्षा॥ यवीतके॥ समलंकता॥ ॥
 रंगिकलनवायविधि॥ ॥

ततश्चागस्त्यादिनित्यकर्मकथा॥
 यक्षमधुयनेसखदिसिवाक्ष॥ यज
 माननावय॥ ॥ उज्जुआदि॥ यज
 मानस्यशुचुददण्णी॥ ॥ कृपना
 नायधामुक्तिमोयनतत्यासाधायः
 विमर्शुकेलनधुजावनादिकनि

मित्यर्थस्य यादौ नमः ४ स्वाहा ॥ यथै
 २॥ उं माहात्म्यं कावेर्यादि ॥ ॥ मूलावा
 र्यस्य जादिया दार्थ ॥ ॥ यजमा
 नस्याशु नृदक्षिणी ७ नैक नाना
 यद्यतिमायुतिशतत्यासाद्य
 त्रिस्तुल्यकालेन च जावना रुदनि
 मित्यर्थमिदमासनादि आसनं नमः
 ४ ॥ यथै नमः ४ ॥ यादार्थ ॥ ॥
 आचार्य नगुन नमस्का न ॥ न्यास ॥
 उं हृदय याय नमः ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 (न न क नान्यास ४ ॥ अर्थ याय
 जाहद यादिना (धन मूद्रा दक्षिणी ७ ॥
 गता वलि द्यय दद्या ७ ॥ गृहना माह
 नक्ष गद्य वद कक्ष गाल यागिनी
 रुद कादि अलिता इति वक्ष्या ७ ॥ ॥
 नवात्मा ॥ रुत वलि ॥ स्वस्व मन्त्र व
 लि ॥ विष्वक् नक्ष गाल नैक नाना
 न्याय मन्त्र वलि दद्या ७ ॥ ॥
 कृपा तम ॥ उं क्री नत्र सिंहाय वलि
 गृह २ स्वाहा ॥ ॥ कृपा तम ॥ उं वि
 श्वक् नया यदं मया यथै धृय दी
 ययु जावलि गृह २ स्वाहा ॥ ॥
 वद ॥ उं गद्य नां वा ॥ उं नमा वक्ष्या

या ॥ उं अम्ब अम्बिका ॥ उं रुयतय स्वा
 हा ॥ उं द्युतं द्युतया वा न ॥ उं विष्णु गद्य
 द्युत ॥ उं द्यावै दिना स्वाहा ॥ ॥
 धृय दी जय मारु ॥ उं निर्वाहं निर्विक
 लं ॥ अम्ब वलि विमर्दनं ॥ ॥
 कृपा तम वलि ॥ कृपा तम वलि
 यकी वाय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

गत ४ ॥ अर्थ दान्या मन्त्रा वीहि वज
 ४ मर्थ य धृवा दान मन्त्र द्यादौ ॥ ३
 आका (न्या नमः ४ ॥ दिना मय्यै दिः
 द्या ॥ ३ गद्यतय नमः ४ ॥ दान वाम
 ॥ उं द्वा द्विलिके ॥ ३ मनस्वे नमः ४
 ॥ दान दक्ष ॥ ३ दान दक्षिण नमः ४ ॥ म
 ध्या ॥ ३ नदि नमः ४ ॥ स्वदक्ष गद्याय
 ॥ ३ गद्य नमः ४ ॥ गत (ध्या ॥ ३ मरु
 काला य नमः ४ ॥ वाम ॥ ३ यम नाथे न
 मः ४ ॥ ३ दक्षिण नमः ४ ॥ ३ रुद्र अम्बाय
 रुद्र ॥ दक्षिण ॥ ३ दक्षिण ववाय द्वा ॥
 अवगुण नै ॥ अम्ब वद ॥ मूल नाव
 ला ॥ उं द्वा (धन ॥ गताना वाय म
 द्या मरु यायु यता मन्त्र वीहि वज ४
 मर्थ यय्यै म (ध्या विवित्र ७ ॥ उं ह्रीः
 यायु यता मय द्वा रुद्र ॥ दिव्या नत्रि
 दक्षी मान विद्या नता नय द्वा दिका

[illegible]

विरुगं॥दवाग्नि यडमानरुगी॥ ॥
 (गमयलिङ्गार्चनं॥ स्नानयंत्रगवासा
 नचन्दनसिंदूरयक्तायवीतयूष्यः
 दसीममतचक्रधूयदीय॥ वंदे ॥
 ॐ गिवा नामासि॥ ॥ स्मारे॥ (गम
 यलिङ्गनूयायसर्वयाययुष्मिनि
 ।सर्वदहयविनायतत्वनूयनमासु
 न॥ ॥ ततोमूलाचार्यः॥ यंत्रगवां
 दत्तवतीत्य॥ ॥ ॐ वाचनं शुभ्रमि
 यादनं शुभ्रमिचक्रं शुभ्रमि (ध्र
 णं शुभ्रमि नारिकं शुभ्रमिमरुं
 शुभ्रमियायुं शुभ्रमिविनां
 शुभ्रमि॥ यासनं॥ ॥ ॐ मनसु
 यायतां वाक्यं यायतां वाक्यं
 यायतां वदं यायतां वदं (ध्रः
 नं यायतां यकं कनं यदादि
 नं यायतां निष्ठायां नं
 द्युतं महांसु ॥ ॐ य (ध्रः
 धितं मेनं ॥ ॥ ॥ अथ
 ॐ त्वमग्ने द्युतिः॥ तच्छ्रुं दवयति
 स्मार्थं यंत्रगवां संगृह्य कल (ध्रः
 ॥ ॐ त्वं यंत्रगवासाधनं ॥ ॥

ततोऽक्षान्तरवद्गविधिः॥ न्यासः॥ क्षान
स्वद्गयूजा॥ ॥ यद्गुनीनालमा नव

कृत्वा यत्किं न तां दले ॥ स यत्तु श्रुति
वाक्मन्त्रं वीवाधममममा ॥ उं क्रो
क ॥ अस्मा यत्तु ॥ उं मरु ॥ उं न्द्रा
वक्र रुम् ॥ वामरुम् न गृहीत्वा ॥ ॥

तत्तु यीतवृत्तं न न का वक्राष्टलिखि
वाने सयको (मस्तिवानवलिदद ७
॥ न्यामय या गयूजा ॥ ॥

उं क्रो न्द्रा अं न्द्रा दीयाय वलि गृह्ण
श्वा ॥ उं क्रो न्द्रा कं न्द्रा दीया
यवलि गृह्ण ॥ उं क्रो न्द्रा
यंता मुदीयाय वलि गृह्ण २ स्वा ॥
॥ उं क्रो न्द्रा गं न्द्रा दीयाय वलि
गृह्ण २ स्वा ॥ उं क्रो न्द्रा नं न्द्रा दी
याय वलि गृह्ण २ स्वा ॥ उं क्रो
यं यं मीमादीयाय वलि गृह्ण २ स्वा
॥ उं क्रो न्द्रा यं गं न्द्रा दीयाय
य वलि गृह्ण २ स्वा ॥ उं क्रो न्द्रा
नं वा न्द्रा दीयाय वलि गृह्ण २ स्वा
॥ उं क्रो न्द्रा को मा न्द्रा दीयाय
वलि गृह्ण २ स्वा ॥ म ॥ उं क्रो न्द्रा
वक्राष्ट वलि गृह्ण २ स्वा ॥ उं क्रो
यस्मात्तु काया वलि ॥ ॥ उं अ
निताम्नादि ॥ रुद्रकादि ॥ ॥
तत्ता वेदावर्चन ॥ ॥ उं गम्भीनीत्वा

॥ उं अम्भु अम्भिक ॥ उं विष्णु अम्भिक ॥
उं धृते धृतयावान ॥ उं अम्भु वद ॥
उं उरायिव ॥ उं अम्भु रागा ॥ उं न
भाव न्द्रा य ॥ उं नभी मुसर्थ्या ॥
धूय दीय ॥ जयस्मा ग ॥ उं न्द्रा दीय
क (लेल अगा मुवर्द्धन रुम्भिमानाना
गदीय रुम्भु सोमा गम्भु अर्थवान्
॥ अय अ न व दीय अ को मा न्द्रा
य मरु क ॥ न्यासा म्भु विमर्द्धय
दलि ॥ यूद्धा दीनी मूर्तिकी गृहीत्वा
वल्या निधाय ॥ रुतिन व वलि ॥ ॥

गता रुम्भि (मधन ॥ ॥ तत्तु य्थी म्भु
यन ॥ ॥ उं क्रो न्द्रा यानम ॥ ॥
यूजन ॥ उं रुद्रा गं न्द्रा स ॥ ॥ यरु
मधुय ॥ उं क्रो न्द्रा य्थि वी नम ॥ उं रु
वसि रुम्भु न्द्रा दिदि न्द्रा विष्णु
या विष्णु रुद्र न्द्रा धनी ॥ य्थि वी
य रुद्र य्थि वी न्द्रा रुद्र य्थि वी मादि ॥
नी ॥ ॥ अस्मा द्दाम स्कार ॥ ॥
नित्री रुम्भु ॥ मूल मन्त्र ॥ ॥
या रुम्भु ॥ उं क्रो न्द्रा अस्मा यत्तु ॥ ॥
ता रुम्भु ॥ उं क्रो न्द्रा अस्मा यत्तु ॥ ॥
सि रुम्भु ॥ उं क्रो न्द्रा कवचाय रुम्भु ॥ ॥
खनन ॥ उं क्रो न्द्रा अस्मा यत्तु ॥ ॥

निश्चि य ७ ॥ ॐ ह्रीं निखाये वषट् ॥
 यूजने ॥ ॐ ह्रीं हृदयाय नमः ॥
 समीकने ॥ ॐ ह्रीं सिन्धुसखाय ॥
 अश्वकने ॥ ॐ ह्रीं कवचाय ह्रीं ॥
 कूटने ॥ ॐ ह्रीं अश्वकने ॥
 लेयने ॥ ॐ ह्रीं कवचाय ह्रीं ॥
 समीकने ॥ ॐ ह्रीं अश्वकने ॥
 यंत्रगणनाय ह्रीं ॥ कवचने चतु
 दिक्क कृष्णयुग्मे युग्मे निधाय ॥ मध्य
 व ॥ ॥ ॐ ह्रीं अश्वकने ॥ कलाये नमः
 ॥ ॐ ह्रीं विद्या कलाये नमः ॥ ॐ ह्रीं
 निवृत्ति कालाये नमः ॥ ॐ ह्रीं यति
 का कलाये नमः ॥ मूलने यासाय ॥
 ॐ ह्रीं यष्टीसूय नाय नमः ॥ ॐ ह्रीं
 नायुषि वी ॥ अथ यूजने ॥ ॐ ह्रीं यष्टी
 जनि ॥ अथ याज्ञिके नाय ह्रीं ॥
 ॐ ह्रीं वसुधा ॥ यासाय यूजने ॥ ॐ ह्रीं
 वासुधियतये वक्षः ॥ ॐ ह्रीं
 वामूक्षमिसू मनसामानां तेन त्वाव
 दध्ना नि सविता सूक दध्ना ॥ अस्मिन्
 लोकं सूक ते वलोकं स्नानं मे सरुय
 या कवामि ॥ ॐ ह्रीं अश्वकने वक्षः मि
 तियका कलामलुयं रावय ७ ॥
 ॐ ति मलुय विधि ॥

पीतवृक्षे नमः लवयं लिखित्वा वि
 यूजने ॥ ॥ ॐ ह्रीं अश्वकने कायमिवा
 मुमूर्त्तये नमः ॥ ॐ ह्रीं वीरुयष्टी ॥
 दक्षव्रीहि ॥ ॥ ॐ ह्रीं यष्टी कायवि
 मुमूर्त्तये नमः ॥ ॐ ह्रीं देवि वी ॥ वा
 मलाजा ॥ ॥ मध्यमं मार्जनी ॥ ॐ
 ह्रीं अश्वकने विनाशाय वक्षः ॥ ॐ ह्रीं
 कथये नमः ॥ ध्यानं ॥ नक्षत्रक शिने न
 वयि गुरु ॥ अथ मूर्द्धनी ॥ लवणक
 यालासिद्धि निने वन्द्य ॥ ॐ ह्रीं वी
 यादं मार्जनी दसूर्यकायाय नमः
 ॥ ॐ ह्रीं यष्टी ते निखं वक्षः नीविद्युमद
 नी ॥ ॐ ह्रीं वक्षः यज्ञानं ॥ ॥ वीहियने
 ॐ ह्रीं वीरुयष्टी ॥ ॥ लाजाक्षये ॥
 ॐ ह्रीं अश्वकने वक्षः ॥ ॥ वामरुक्ते नाथ
 यायं निवे गुरु तादक्षक वक्षः ॥ ॐ ह्रीं
 ह्रीं अश्वकने दक्षिण वक्षः नमः
 कलामय यष्टी नमः ॥
 ॐ ह्रीं वायवाय विवीतये यष्टी नादक्षक
 तथयय विनाशाय वक्षः ॥ ॐ ह्रीं
 कक्षनाय कलये ॥ ॐ ह्रीं गुरुयष्टी
 ॥ ॐ ह्रीं अश्वकने मित्रासनं नयुन ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ ह्रीं वीरुयष्टी ॥
 ॐ ह्रीं मलुयालं रुनविधि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

४ संभवामानावत्रायथां द्वात्रसदासि
ताश्यिचवट४ यूवार्वात्रा रावय७ ॥ ॥
द्वात्रायवी ॥ श्रीगु ॥ यूवद्वात्राघिनामा
उदयनित्रिमरुनृदगध्वव्याथीना
नायूययहृल्लायमत्रगधनये४ काकि
लानादत्रमा४ श्रीमान् विस्मीर्ल्लुभाखा
वद्रुतत्रलवान्वृक्षसक्तानयकि
र्वालाविस्मीर्ल्लुगनात्रयनिकिप्रक्ष
यव्वताश्यनमा१ मु ॥ ॥ ॐ द्रौ
नन्दिननम४ ॥ ध्यानं ॥ यूवाशुद्धा
जटाध्वत्रीत्रककाथाद्विवाद्रुक४ सा
क्षमालीशिषूलीवनन्दी ॥ ॥ द्वात्रया
त्रक४ ॥ ॐ उदयनंमूनवागिर्गृन्वत्
मृगसाय ॥ मृमृजीकारुवकुन४ ॥ ॥
मुनि ॥ ॥ ॐ गयद्वासनमृश्चत्रकव
॥ ॥ मरुध्वत्र४ ॥ सर्वभान्निक्त्र ॥ ॥
वनन्दिमूर्कनमाशुन ॥ ॐ द्रौमरु
कालायनम४ ॥ ध्यानं ॥ वशुव्वाद्र
विष्मलाशयीनाम्नमहादव४
कूर्चवान्पिंगकणश्चमृमालीः
शिलावन४ ॥ गत्त्रवृत्तिकयाश
गूलखटववामक ॥ कृष्णशाम
रुकालाद्वात्रवेद्वात्रवामक ॥ ॥
ॐ अस्मज्जामरुनायव्वताशावृग

हृत्विंशत ह्रीं श्रीं सदा स्वाहा यः सः सः
 तं मुनिं ध्यायेत् ॥ १ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 अथ मुनिं ध्यायेत् ॥ ॥ श्रीं ॥ यथा मनसः
 मा तूहं कुरु वरुणं मा कुरु वरुणं ॥ सर्वं वि
 श्वं वरुणं वरुणं कालं न भामुने ॥ ॥
 ॐ जया येन मुनिः ॥ ॐ यथा मनसः
 यादवी चैकं काचं तु कुजा ॥ वज्रं
 काकुर्णं खण्डं ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 ॐ यं जत मनः ॥ श्रीं ॥ ॐ नमः शिवाय
 तुर्वीशं नमः शिवाय ॥ ॐ यथा मनसः
 ॥ सर्वं दाता या जयादवी न भामुने
 ॥ ॐ विजया येन मुनिः ॥ श्रीं ॥ ॐ वि
 जया रुमवर्णं राणं किंच कात्यला
 गदा ॥ नमः शिवाय ॥ ॐ यथा मनसः
 द्विदायिनी ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः
 मवर्णं नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय
 निधी ॥ सर्वं सिद्धिं यदा ता या विजया
 वन भामुने ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः
 ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
 ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

[illegible]

४॥ ध्यान ॥ नखसुटिकर्णकार्णखरु
 रुठकधाविर्णवकर्णखसु(मरु
 यग्नो ध्यायनेमदा ॥ ॐ अक्ष
 नाजाय ॥ ॐ क्रां स(वेदायनेमः ॥
 ध्यान ॥ यीतवर्धुचतुर्वाक्षमक्षः
 मालासूयसुर्कावपदा रुयसु
 चअ(वेदं धवध्यायने ॥ ॐ अग्नि
 मीठ ॥ ॐ क्रां आत्मतत्वायनेमः ॥ ॐ
 वसुयज्ञाने ॥ ॐ क्रां विद्यातत्वाय
 नेमः ॥ ॐ ॐ दं विष्णु ॥ ॐ क्रां विवत
 त्वायनेमः ॥ ॐ नेमः ॥ ॐ रुवायवा ॥
 ॐ क्रां गद्यतयनेमः ॥ ॐ एकव
 कृगजास्यचयस्रवर्णमहायुनि
 । अक्षमालाकृष्णधनं आसूयमा
 सनेमिर्ते ॥ ॐ गणनांत्वा ॥ ॐ क्रां
 सनस्रत्येनेमः ॥ ॐ गताकुसुमसू
 योङ्गी ॐ गतारुवणरुषिणा। यूसुः
 कादमानकोरुमावीधवृद्धास्र
 वस्रती ॥ ॐ यावकान ॥ ॐ क्रां म
 हालक्ष्मीनेमः ॥ ॐ ॐ गतयद्रास
 नासावर्ककुमारवचुर्जुजा। क
 लर्णदयर्णवाधनीलाकुर्वेवणी
 रुर्ण। योर्णाननतनूयांमीसर्वोर्ण

कालभारुना। द्वात्राक्षरुमिगायवी
 लक्ष्मीपूर्यविचिन्तय ॥ ॐ श्रीधनल
 क्ष्मी ॥ ॐ क्रां तत्पूषायनेमः ॥ ॐ यत्प
 पूरवी ॥ ॐ क्रां ॐ न्यायवक्ररुमायसु
 नाधियतयनेमः ॥ आवरुर्न ॥ ॐ अक्ष
 रिसर्वामत्रसिद्धसाक्षीपरिपूर्णाव
 दधनामत्रणासंवीक्षमनायत्रमा
 ग(ननवक्षाधनत्रोरुगवन्नमः ॥
 ध्यान ॥ त्रिवावतगजापुर्ठरुमवर्ण
 किलीठिन। सधनयनेर्णकवक्रः
 यार्णिविरावय ॥ ॐ द ॥ ॐ नेण
 नमिन्त्य ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ न्यमुमरुक्षी
 यमरुमाक्षागजामनवक्ररुस्र
 मरुकायनेमः ॐ पूर्वदिक्ने ॥ ॥
 ॐ क्रां कूमूदाक्षधजायनेमः ॥ ॥
 ॐ अस्माकमिन्त्य ॥ ॐ क्रां यल्लवाय
 नेमः ॥ ॐ क्रां कवयायर्द ॥ ॐ अक्ष
 सुयवाण ॥ ॐ क्रां कृणायनेमः ॥ ॐ
 ॐ क्रां वक्रायर्दरुठ ॥ ॐ वृरुस्रने
 वृदि ॥ तिरुडा ॥ ॐ क्रां वक्रायने
 मः ॥ ॐ क्रां क ॥ अस्मायर्द ॥ ॥
 ॐ यवर्दयसर्विजल ॥ ॐ क्रां ॐ
 मयायनेमः ॥ ॐ क्रां दययायने

न
 न
 न

म॥ उं गं नमः ॥ उं कं द्रु वाय
 नमः ॥ उं कं कव वाय ॥ उं कं
 कु का कु म ॥ उं कं सथी यममः ॥
 उं कं ॥ अ म्मा यरु ॥ उं ॥ मा नू द्रा
 य ॥ उं कं म्मा जयनमः ॥ उं कं कव
 वाय ॥ उं न कं रु न ॥ उं कं न कं
 ये नमः ॥ उं कं क ॥ अ म्मा यरु ॥
 उं न्नी ज विष्टु दा ॥ ॥ व न्ना
 दि वलि ॥ उं कं य या ग रु पु का
 (धे व सि गी) म व द्द रु य ॥ व द्दा
 धी ग ध नू द्रा ॥ ॥ न्ना दि ग ध स म्मि
 ता ॥ न स र्वे स रु द व र्था व लि गृ द्वा
 नु म स द्वा ॥ उं कं म्मा य ति ष्ठा रु व ॥
 उं थ त य ॥ ॥ धू य दी य ज य म्मा ॥
 ॥ न न्दी काल य रु (धे व ज या व वि
 ज या त था) म (धे व कृ त य म्मा) ग
 म्मा य म्मा त था) म म्मा य ति ष्ठा रु व
 म्मा सि गी ग रु नू म्मा ॥ व म्मा म्मा रु य वी
 वे व द्वा न्ना रु म्मा यि द व ना ॥ न त्प नू य
 मि न्द म्मा मि रु (धे व वा य ता का ध्वा
 कृ ण म्मा स र्व द वा दि स म्मि त ॥ न न्मा
 मि स म्मा ॥ ॥ म्मा नि द्वा न स मा धि गान्

॥ म्मा वी थ म्मा का य उं थ दि म
 रु मि त्रि ॥ वि द्वा य रु ना मा नि म
 वे द व न म्मा रु न ॥ द व द न व ग म्मा
 वी थ रु ना रु म्मा न ग ॥ अ य थ म
 न वा ग वा द व मा त न व व वा न नः
 म्मा ध व न्ना कृ र्व रु व म्मा वि ग
 ॥ अ य ॥ य रु म्मा व न्ना धी य ॥ स र्व
 यि द्वा वि नि या ति य ॥ द्वा ना दि द व ॥
 मि त ॥ न्द स र्वे न्ना कृ न्द स र्व दि नि
 दि गी ॥ ॥ अ य ग म्मा दि ॥ ॥
 ॥ मि य र्व द्वा ना रु न ॥ ॥

न्ना द दि द्वा ना रु न ॥ उं द दि द्वा
 ना य न म ॥ उं उं द्वा न्ना य न म ॥
 न्ना मा य या य रु द्वा ॥ उं ॥ वि ष्णु त वा द
 या मि ॥ उं ॥ न्ना ना यृ थि वी ॥ उं कं वि द्वा
 द्वा ना य न म ॥ ॥ ॥ उं कं न्ना व
 रु वा वि रु ग म म ना रु म व ली स म्मि ता
 रु म ना नि न द्वा कृ ल नि वि व न्ना व
 द्वा व ल यी ॥ म्मा दी म्मा द म ना रु न
 य ना य रु कृ ला रु म द्वा म्मा म्मा रु न
 म्मा म्मा रु वि स र्वे म्मा य रु द्वा द दि द्वा
 ॥ उं द्वा ना य वी ॥ ॥ ॥ उं यी म्मा वि
 न ग म्मा म्मा द न म्मा रु ली ला रु म्मा रु न
 रु ॥ ॥ न्ना वि नि ष्ठा मि द व कि न व ग (धे

उं उं कं दि द्वा ना रु कृ वि द्वा हा मि दि द्वा ना
 अ वा रु या मि द्वा न मि द्वा रु य य मि द्वा ना ॥

॥ संसृष्टमाना वने । गृह्णात्येव विष्णु
लात्पलायै च यद्यनागरी वधाना
फत्राभार्य यच्च तदेव धृगुसकलानि
र्यं न मादद्वि (६) ॥ ॥ ॐ क्रोडं गिता
नुष्ठा य नमः ॥ ॐ चत्वारिंशद्भुजा ॥ ॐ
क्राञ्चनकासनाय नमः ॥ ॐ क्रोडं
दिन नमः ॥ ॐ नमः ॥ कृषिसिवा व
नद्वज्रस्त्रिभुवर्मा वरुणि नमः ॥ वृद्ध
नृपी गिरिद्वय ॥ क्रामकृष्णसूयाधु
ल ॥ शिने च ॥ धूलया वीच कोपीना
द्वय कूर्चक ॥ रुंग नीतिग (६) ॥ ॐ
निर्यं नृस्य निवाय नमः ॥ ॐ उग्रं ला
हिते नमिष ॥ सावते न नृदे दीर्घ
रुने दयकृते नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
यमदा । रुवस्य कथं नृदस्यो नया व
महादवस्य कृषं सर्वस्य वनिष्पृय
धुयते य नीत ॥ ॐ नमः ॥ यीत यथा
समानुदयाधुलं वृद्ध नृयिनी । यत्न
सिद्धि यदा गात्री रुद्रि नृय नमः ॥
॥ ॐ क्रोडं गिता य नमः ॥ ॐ नमः
॥ गजास्य मेकदन्त ॥ कृष्णवर्णं च
उरु ॥ ॐ नमः ॥ माला कृष्ण ॥ मूलल
धुका वात्रिनी ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
ॐ नमः ॥ मूषासन समा नृदं कृष्णव

[illegible]

यनः पाहिमखनमस्तु ॥ ध्यानं
 ॥ कृतान्तं महिषाचरुं दधु रुमं रु
 यानकी कालयागधरं काले ध्या
 यद्विद्विद्विद्विद्वि ॥ वेद ॥ उं यम
 दनं ॥ मूर्ध्नि ॥ दधु रुमायमादवा
 धर्माध्या कौमरावलः ॥ त्रिविधा
 वारुयि श्यामि धर्मत्राजनमाशुते
 ॥ उं द्रा अथा नायनमः ॥ उं यान
 नृद निवा ॥ उं द्रायु लीकध्वजा
 यनमः ॥ उं अस्माकमिन्द्र ॥ यत्नव
 माला ॥ उं द्रं कवचाय दूं ॥ उं अश्व
 सुयना ॥ कूर्म ॥ उं द्रं रुद्र ॥ उं वृह
 स्पते कृदिनमि ॥ मित्रुज ॥ उं द्रा
 दः अस्माय रुद्र ॥ उं यवृक्षं वृमसि
 जना ॥ (गमय ॥ उं द्रा द्रुदयाय न
 मः ॥ उं गन्धर्वा ॥ दूर्वा ॥ उं द्रं क
 वचाय दूं ॥ उं काष्ठात काष्ठात ॥ सख
 य ॥ उं द्रं अस्माय रुद्र ॥ उं न्मा नृ
 दाय ॥ यं वसुर्ग ॥ उं द्रं कवचाय दूं
 ॥ उं वक्षो वरुनं ॥ वक्षो ॥ उं त्वं जवि
 रुदासुखाव ॥ वन्दनादिवलि ॥ ॥
 उं कालागिर्याग्नि वतालवधुध्व
 रुद्रयः ॥ कीमात्रागलनृदाध्व य
 यामादिनिर्मिता ॥ तमर्च्यं मनुष्य
 वस्थावलिगृह्णन्तु मे सदा ॥ ॥

उं द्रा मयतिष्ठारुव ॥ उं यनयं ॥
 जयकारं ॥ उं वधुध्ववधुध्वध्वरु
 श्रीगलपतिस्तथा ॥ उं नायु (गयइ
 र्वदः कावत्रीमत्रयुगथा ॥ वृध्व
 रुमयति (ध्ववधुध्वकोरुस (ध्ववध्व
 ॥ कीमात्रावैश्ववीरकिर्वाध्वसु
 शिदवता ॥ वनाहाधा नवकुश्रदा
 नमः ॥ कृतान्तकः ॥ यताकाध्वज
 रुणादिसर्वदववावसितः ॥ विद्या
 दार्जसमाश्रित्य नानामिममस्तुका
 त ॥ मरुवीर्यामरुकायः ॥ रुनाः
 नमस्तु ॥ गुरुदावेष्टितं लीलं
 लामस्तु ॥ (गुरुनं ॥ दवदानवगध
 वी ॥ अयं वयं ॥ ॥ निद्विद्विद्वि
 द्वावाचनं ॥ ॥

नृगुमस्तुमद्वावाचनं ॥ ॥
 उं द्रा अश्वत्थं रुद्रकायनमः ॥ नासाध
 याय यूजा ॥ उं द्रं विष्णु ॥ उं नत्वा
 यामि ॥ उं श्यानायुधिवी ॥ उं द्रा नि
 वृत्तिदायाय नमः ॥ ध्यानं ॥ उं जा
 यन्तं ककुरासुतास्त्रहियनर्गका
 वनायं मरु ॥ दालाय ध्वजना
 विध्वसकाददीया मानः ॥ सदा
 यासाधनि सयः ॥ समस्तम वथा
 वेदूर्यं वत्तावेया नानादानवतः

(उं द्रं द्रिगध्वजना नत्वा विष्णु विष्णुमरुतः ॥ अथारुयामिद्वान्मिद्वद्वयं यतिनृ धर्मा ॥

गुरुक कजनालीलासिगायत्रि
 मा॥ वेद॥ उँ द्वाजा देवी॥ स्मार्ग ॥
 रागवात्रुमलुलनित्रिवत्रावि
 स्तीर्णमुखाग्रकः यायाधमिमथा
 मलायधगत्रः सूर्यास्माभिनित्रि॥ यं
 स्मितावाचलदवदावगलीनि
 र्यंसदासद्यतेनानाकृदिमसारि
 तापिमकलीयस्मावर्तननमः ॥
 उँ द्वावत्रतात्रलायनमः॥ उँ चत्वा
 नष्टम् ॥ उँ द्वाञ्जननासनायन
 मः॥ उँ वृषायनमः॥ ध्यानं ॥
 कवर्कचक्रवर्दं (गोत्रवर्णवृषा
 ननी। अक्षमालाशिर्गूलश्चवत्रदा
 रुययानिर्न॥ वेद॥ येतवाजिकनि
 कर्दनानददामरुंयत्वा॥ रुत्रक्ष
 मिंयूत्रीर्ष्यमायायुषःयूना। वृषा
 मिंवृषर्षरुर्ननवांसमूदियंयू
 न्नायादिवितथ॥ स्मार्ग ॥ श्वगा
 दुर्मंदिमार्तं वयस्त्रिमदात्रदक्षि
 लासर्वयूष्टिकर्तृनिर्णवृद्धयूयन
 मामुते॥ उँ द्वास्क्रन्दायनमः ॥
 ध्यानं ॥ एकवर्कदिनर्तं वत्रक
 वर्णनूणयूरं। अमिवक्रकथाग
 किंखट्यधवक्रकूटं। यदुर्ज

श्रील

मयुजात्रुर्वात्रुषदात्रवामकः। स्क्र
 न्दयूयंयडद्वर्णे। त्रीयुर्गमगड
 म॥ उँ यदस्क्रंद॥ ॥ स्मार्ग ॥ मद्य
 नादासनसुं वत्रकवर्णमलाय
 मि। मलुसिद्धियदागार्नेस्क्रंदमूर्क
 नमामुते॥ उँ धाशुनमः॥ ध्यानं ॥
 एकवर्कसूयीर्गागीयदासुवत्रु
 कुजा। याभाकृष्णवर्कवधायी
 भानियदायिनी॥ उँ विष्णुर्धुर्क
 वीर्यानि॥ स्मार्ग ॥ यीतवर्णवत्रु
 वर्दं सर्वलंकालरूपिना। सर्व
 भानिकत्रीयवीधायीवेवनमा
 मुते॥ उँ विधाशुनमः॥ ध्यानं ॥
 कमलासनवत्रुवर्दधजासूय
 गदारुया। विधागीकृकमाणा। राद
 वीयूष्टियदायिनी॥ उँ दिवावाविष्णु
 ॥ स्मार्ग ॥ कमलसुं सुखासीनेवत्रु
 रुसुधंजाकरुया। कृकमायूष्टिदाय
 वीविधागीवनमामुते॥ ॥ उँ द्वा
 मामवेदायनमः॥ ध्यानं ॥ वाल
 सूर्यायमायमी। सामयस्त्रिमयूवि
 रावयं। यूरकं वनिदधीवत्रु
 दामालुकमधुर्ल॥ उँ अग्न्याया
 ॥ उँ द्वादायत्रयुगायनमः॥ ध्या

न॥ द्रुवोमर्कठवर्णरंगदाकृष्ण
 विष्णुविर्ग। यद्गर्गखधनध्ववद्वा
 यत्राधियर्गिसम्पत्॥ उं अद्रुवाजा
 य॥ उं द्रां गुकायनम॥ उं अन्नात्त
 विष्णुर्ग॥ उं द्रां गनेश्वरायनम॥
 उं अन्नायवी॥ उं द्रां विरीषधायन
 म॥ उं अद्रुमां रागमसि॥ उं द्रां कृ
 यायनम॥ उं अयसं रुद्र॥ उं द्रां
 नलायनम॥ उं अद्रुमम॥ अविष्ण
 क्रियसंस्तुतिमूयासते। तनाह्वयं
 वनेगमा अडसम्। त्या॥ वना॥ ॥
 उं द्रां अन्नलायनम॥ उं वसुधम
 वसतिश्चमकर्मवमर्गकिष्णमे
 र्थश्चमममम॥ वं त्यावमर्गतिश्च
 मयर्कनकल्यत्नी॥ उं द्रां गम्येनम
 ॥ उं समुद्रत्वा नृमना॥ उं वन्द्यराग
 येनम॥ उं नदीय॥ योऽक्षि॥ ॥
 विष्णुर्ल॥ उं द्रां सोमायनम॥ उं त
 मिश्रस्यवर्ग॥ उं द्रां यमायनम॥
 उं वल्गुलां अमिसूर्यवदादित्ये ॥
 उं द्रां व्यवसायनम॥ उं मद्रादेवा
 नामसूर्य॥ यूनादिनाविशुद्धातिवदा
 यम्॥ उं द्रां आत्मगत्वायनम॥ उं वि
 द्यातत्वायनम॥ उं द्रां निवर्गत्वाय
 नम॥ उं द्रां गणयनयनम॥ उं द्रां

उं गुह्यनात्वा॥ उं द्रां सप्तस्त्रेनम
 ॥ उं यावका न॥ उं द्रां मद्रालक्ष्मीन
 म॥ उं श्रीधर्ग॥ उं द्रां वावर्ग
 ययागुरुस्मायजलाधि॥ यतथ
 नम॥ आवाहनं॥ अर्धं हियादा
 गधर्वाधीनां गधनयर्थयमरु
 यात्रादि॥ विद्याध्वन्यामनगीयमा
 नयादित्वमस्मानरुगवत्तमम्॥ ध्या
 तं॥ नागयागध्वनं हर्षं वत्तौ घद्युति
 विग्रहं। गणां कधवलं ध्यायद्वर्ग
 मकत्रामर्ग॥ वद॥ उं वं ममवर्ग
 ॥ स्तार्ग॥ नागयागध्वनं कनिर्ग
 अलवाडं मद्रावलं। निम्नग (ध्वति
 विख्यातं नाग वाजनमाश्रुतं॥ ॥
 उं द्रां निवर्गत्वायनम॥ निवर्गनामा
 सि॥ उं द्रां सद्रा जागायनम॥ उं स
 द्रा जागायम॥ उं द्रां स्रं स्वकर्तु
 ध्वजायनम॥ उं अस्माकमिन्द्र॥
 उं द्रां नागयागध्वनं रुद्र॥ रुद्रं॥
 उं वृहस्पतेरुदितमि॥ यत्तुवा॥ उं
 उं द्रां कवचायर्ग॥ उं अश्वसूयवा
 ॥ तियुज॥ उं द्रां अस्माय रुद्र॥ उं
 यवर्गं य॥ उं द्रां हृदयायनम॥
 ॥ गमय॥ उं गम्यद्वानादना ॥

वेदविवाहनाम् यन्निर्विघ्नमिच्छात्तदाहयामिदं प्रमि
 वृक्षस्यपिगृह्यम् ॥ ३

दूर्वा ॥ ॐ क्वं कववायदू ॥ ॐ कां
 नकांमुदात ॥ ॥ मर्षय ॥ ॐ ॐ ॐ
 म्नायदू ॥ ॐ मान्वाय ॥ मूर्ण ॥ ॐ
 क्वं कववायदू ॥ ॐ नकां न ॥ नका
 ॥ ॐ क्वं कववायदू ॥ ॐ जविदू
 ॥ वन्दनादिवलि ॥ ॐ जयनीवक
 वा लीवडनाम वदू ॐ यथावावादी
 गदन्वाधववृत्ता ॐ दिगिमिगा
 न मर्षमनुदवया वलिगृह्यनुमस
 दा ॥ ॐ क्वं मूयमिष्टा रुव ॥ ॐ यन
 य ॥ ॐ जयमार्ग ॥ ॐ धर्माविधाजि
 कोथेव वृषस्कन्दसु ॐ ववा सामव
 दादायनश्च गलुकी कोमिकी गथा ।
 उज्जनावा वि मूयश्च कवालीरुववसु
 था ॥ वावादीयेव मिन्वादीदावाधववि
 दवना ॥ मद्याजातश्च कयिल ॐ यागीदा
 नमाम ॐ के । यगाका धरुक्कुणाश्च स
 र्वदेवममाप्रिता ॥ निवृत्तिदात्रमाप्रि
 तानानमामिसमसु कान ॥ मरुवीथी
 मरुकाय ॐ मूर्वर्ण सदृग्युमिष्टा
 यदावलिनीलेलनाम्नाप्रीगमेमाद
 नी ॥ दवदानवगधर्वा ॥ अय्यवयक
 सुववकधीय ॥ ॐ गियथिमहावर्न ॥

गताम नवावाजनी ॥ ॥ ॐ क्वं यु
 क्ताम नवायनम ॥ ॐ मादिगु

यागयूजा ॥ ॐ वदविष्णु ॥ ॐ तुला
 यामि ॥ ॐ म्नानायुधिर्वा ॥ ॐ क्वाय
 निष्ठा कलादात्रायनम ॥ ध्वानी ॥
 ॐ श्रीमान् श्रीवदिना आहिमकनक
 मयादलेरुत ॐ युधिर्वागं गतीथ
 दिजानागु नूतवदृगदावन्मत्रासि
 मूमनू ॥ नाना यक्षां गधर्मा विप्रमि
 उरुवर्ण किन्त्रावर्ण विलासो नित्यं
 संस्मानरुमियजनविधिववराव
 यदीदृगर्न ॥ वद ॥ ॐ दवावादी ॥
 म्ना ॥ ॐ श्रीलेलन्य मूमनू नामहिम
 रुत्तवर्ण मिद्धात्रयानानावृक्षसामा
 कृत्वा निकनर्कखत्रीसत्रासर्वत ॥
 । नारीगधमना रुवर्णनिवयश्च
 नूनिनामृाठिक ॐ म्नाय यवर्णनाज
 नामगित्रमावन्द सदा रुकिना ॥
 ॐ क्वं म्नायागुनात्रनायनम ॥ ॐ व
 त्वाविष्णु ॥ ॐ क्वं म्नायनायन
 म ॥ ॐ क्वं दवीनम ॥ ध्वानी ॥ सिरुम
 नहिगादवीपीतवर्णवर्णुजागिष्णू
 लमृत्तल्लदकवा मयागं वदयर्ण ॥ ॥
 वद ॥ ॐ दवीतिप्र मिमादवीनस्य न
 दमनरुनीमुखं नूमध्वा म्नामिन्द्रोयद
 ध्वनिद्विर्ध्ववसूवनेवसु ॐ म्नायानुयज
 ॥ म्ना ॥ रुनिष्टुष्टा मनादवीपीतवर्ण

सूत्रोवनी। ॐ कामिद्विहलेनापीथवा
नूयनमासुते ॥ ॐ क्रौंचभुयनमः ॥
ध्यानं ॥ कृष्णचतुर्मुखमुक्ताक्षमुक्ता
काक्षमृगवान्। गूलकमृगुलं वाम
आयुधवर्माहिरुषण ॥ वद ॥ ॐ य
थं वाचं कल्याणमानयानि जनस्य ॥ व
द्मना ॥ त्वाया ॥ नृदायवायीयवत्वा
यद्यानवीयचयिथायवाना ॥ व
द्विना ॥ वदा ॥ उत्रिरुह्याममं वीमं
मृक्षकामयमाधानमं ॥ ॥ श्री
॥ यीतारुत्रणसंयुक्तं कृष्णवर्णं सुत
जसं। सर्वसिद्धिप्रदागात्रं चतुर्मुखं
नमासुते ॥ ॐ विश्वकर्माय नमः ॥ ध्या
नं ॥ ॐ कान्ध्यामवर्णं विश्वकर्मा
नाकुर्मं हितं गदायुक्तामिर्गख ॥
ॐ कामिद्विहलेनापीथवा ॥ वद ॥ ॐ य
नद्विष्णु ॥ ॥ श्री ॥ ॐ न्ध्यामवर्णं म
हाकाये गदायुक्तामिध्वत्रिणी ॥ ॐ
कामिद्विप्रदागात्रा विश्वकर्मा नमासु
ते ॥ ॥ ॐ केशवालाय नमः ॥ ध्यानं ॥
ॐ ॐ कान्ध्यामवर्णं कान्ध्यामवर्णं कान्ध्यामवर्णं
ध्यात्रिणी ॥ खडाकुलध्वं केशवं अकृष्ण
यक्तुमिद्विदा ॥ ॐ विश्वान्नाटम ॥
श्री ॥ ॐ विनयं विंगलं वीर्यं नीला
अनसमयं ॥ यक्तुमिद्विप्रदागात्रा

[illegible]

वाजाय केन वंती (थेयः) आर्द्धविषमथा
 मेनालसुनेयः यत्कैंगुहायः किः
 जातसमान्था डैरु के यवनेयः किपू
 नृषी ॥ ॐ कौण्डिन्याय नमः ॥ ॐ समुद्रा
 दूर्मिः ॥ ॐ कौमविताय नमः ॥ शिगुलं
 ॐ अयनरुवसूर्यः ॥ ॐ त्वष्टाय नमः
 ॥ ॐ अद्याय वा उदिता ॥ ॐ कौविष्णु
 वनमः ॥ ॐ आकृष्ण ॥ ॐ कौ आत्म
 तत्वाय नमः ॥ ॐ कौविद्यानवाय
 नमः ॥ ॐ कौगलयनयनमः ॥ ॐ
 गणनात्वा ॥ ॐ कौसुनखनमः ॥
 ॐ यावकानः ॥ ॐ कौमरुलक्ष्मी न
 मः ॥ ॐ श्रीश्रुत ॥ ॐ कौसौ कवेना
 यगदाहसाय धनाधिपु यनयन
 मः ॥ आवाहनं ॥ एकहि यद्युष्य
 प्रयत्नकोविधत्तनकेगु (ननसा
 द्वा) मधोमधीरिः यिष्टरिः सरुवगृहा
 लयुजोरुगवानमः ॥ ध्यानः ॥ कवे
 नमः ॥ मासीनेमनेवैखवविग्रहं ।
 सध्वकायं गदाहस मूकनाधिय
 निमनः ॥ वद ॥ ॐ कू विदं गज
 ॥ कौण्डिन्याय नमः ॥ नक्षत्राणां च सर्वेषां यद्व
 नाडः युकीर्तिनः गदाया विधना
 देवः कवेनाय नमः ॥ ॥
 ॐ कौण्डिन्याय नमः ॥ ॐ निवा
 नामासि ॥ ॐ कौ वं वामदेवाय न

मः ॥ ॐ वाममद्यसविउवी ॥ ॐ समु
 खधजाय नमः ॥ ॐ अस्माकमिन्दु
 ॥ ॐ कौकववायद्वं ॥ ॥ यल्ल
 वी ॥ ॐ अश्वसुयना (ग) ॥ कुरं ॥ ॐ
 कौगदायेदुं रुद्र ॥ ॐ वृहस्पतेरु
 दि ॥ निगुडा ॥ ॐ कः अस्मा यद्वं ॥
 ॐ यद्वं ॥ (ग) मयं ॥ ॐ कौ ददयन
 मः ॥ ॐ गन्धदात्रा दूना ॥ दूर्वा ॥ ॐ
 कौकववायद्वं ॥ ॐ काधुन काधु
 न ॥ मयं ॥ ॐ कौ अस्मा यद्वं ॥ ॐ
 मोनूदाय ॥ यं वसुं ॥ ॐ कौकववा
 यद्वं ॥ ॐ वक्राहर्न ॥ वक्रा ॥ ॐ कः
 अस्मा यद्वं ॥ ॐ खं जविष्टदा ॥ ॥
 वन्दनादि वलिं ॥ एकामकेकयाः
 देवरीष (ग) वद्वं यः ॥ चमूधु
 गलप्रदाय कवेन दिलिसं हिता
 ॥ नमः सर्वसन्तुदेवस्था वलिं गृह्णतु
 ममदा ॥ ॥ ॐ कौसूयनिष्ठारुव ॥
 ॐ यनयन्ता ॥ जयमार्गं ॥ विषय
 नंदेनयाला देवी वल्लुसु (धे) वव
 । अथर्ववेदकलियुगस्य लु राग
 सनमः ॥ श्रीष (ग) वादू के उध
 मरुवाखाः ॥ सरुववः ॥ वामः ॥ व
 मरुलक्ष्मी दानादस्मा विदवता ।

यगाकाधुजकुशाधुमर्षदववाव
मिता॥४॥यतिशुद्धात्रमाश्रित्यता
ननमामिमममका न।महावीथी
महाकाय॥४॥पुष्टमुष्टिकमनिरु॥
गवदात्रमितीलेलेहिमवर्कसू
लहरुनी॥४॥दवदानवगश्वर्वा ॥
अयश्चयश्चसुवत्रकलीयं ॥ ॥
वैश्वदेवदानयूजा ॥ ॥

ततआग्नेयदात्रार्चनं ॥ ॥
उंक्रोखरित्रवृद्धायनमः॥ ॥
न्यासाद्ययागयूजा॥४॥आनायुधि
वि॥४॥दात्रादवी॥४॥वत्ताविर्गुम
॥४॥क्रोमहिदात्रायनमः॥४॥क्रो
मोआग्नेयायगकिरुमायतेआ
धुधियगयनमः॥४॥आवारुनं ॥
न॥अहिसर्वामत्ररुवावरुमनि
यवीनेत्रकितारिशुष्ट।तेजावताः
लाकग।नसाधर्ममाध्वनेत्रक
नमानमः॥४॥ध्यानं॥सफात्रि॥
यश्चविशा।मद्रमालाकमधुलं
।दात्रमालाकूलंनर्कगकिरुसं
गासनं॥४॥वद॥४॥अग्निर्मूर्द्धादि॥
मार्गं॥४॥सर्वेतेजामथादवीत्रकव
।महाशुनि॥४॥कागासन॥४॥कि

रुक्मिणीदवनमामुते॥४॥क्रोउ
यवदायनमः॥४॥उं॥गवयनयन
मः॥४॥उं॥गवनांवा॥४॥क्रोसवस्ये
नमः॥४॥उं॥पावकान॥४॥क्रोमहाल
श्वीनमः॥४॥उं॥प्रीधने॥४॥धु॥४॥उं॥क्रो
कूमदाधुकायनमः॥४॥उं॥अमा
कमिन्ध॥४॥यल्लव॥४॥उं॥क्रोववायदू
॥४॥उं॥अवसुयना॥४॥उं॥गकयदूरुद॥
उं॥वृरुस्यतेदुदि॥४॥उं॥क्रोददयायन
मः॥४॥।गामय॥४॥उं॥गवदात्रा॥४॥दूर्वा॥
उं॥क्रोववायदू॥४॥उं॥काकुकाधुत
॥४॥सर्वय॥४॥उं॥क्रोअमायरुद॥४॥उं॥
मानुदाय॥४॥यश्चमूर॥४॥उं॥क्रोववा
यदू॥४॥उं॥नकारुनं॥४॥वत्ता॥४॥उं॥क्रोअ
मायरुद॥४॥उं॥लंजविष्टदा॥४॥वन्दना
दिवलि॥४॥वन्नृगक्रियुवानुश्वन्न
श्ववदू॥४॥यश्चय॥४॥मादनीगवन्नृदाश्व
आग्नेयदिगिर्गमिता॥४॥तसर्वमलु
दवयावलिगृद्धलुमसदा॥४॥उं॥सू
यतिशुष्टव॥४॥उं॥यतेयन्नाम॥४॥जय
मार्ग॥४॥अयश्चरु॥४॥वैश्वदेवदान
त्रार्चनं॥ ॥ततोनेमयदात्रार्चनं॥

ततो॥४॥उं॥क्रोयुगवृद्धायनमः॥४॥न्या
सादिअर्घयागयूजा॥४॥उं॥आनायु
धिवी॥४॥उं॥क्रोवीहिदात्रायनमः॥४॥

ॐ ह्रीं क्लीं नमः ॥

स्वामिना वायु देवनमास्तुते ॥
ॐ ह्रीं उद्यवदायनमः ॥ ॐ ह्रीं गद्य
नयनमः ॥ ॐ गद्यनांवा ॥ ॐ ह्रीं म
नस्येनमः ॥ ॐ यावकान ॥ ॐ ह्रीं
महालक्ष्मी नमः ॥ ॐ श्री ध्वज ॥ ॐ
ह्रीं यल्लवमालायेनमः ॥ ॐ अश्वस्तु
यथा ॥ ॐ ह्रीं सोमर्वनशायनमः ॥ ॐ
अस्माकमिन्द्र ॥ ॐ ह्रीं शक्राय नमः ॥
॥ कृष्ण ॥ ॐ वृद्धस्य ते वृद्धि ॥ ॐ ह्रीं ग
मयायनमः ॥ ॐ गद्यदात्रना ॥ ॐ
ह्रीं कवचाय नमः ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं
ह्रीं काशुग ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं अस्मा
यस्तु ॥ ॐ ह्रीं मानुषाय ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं
कवचाय नमः ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं अस्माय
स्तु ॥ ॐ ह्रीं जविष्टुदा ॥ ॥ वन्दना
दिवर्ति ॥ ॐ वरिणं श्रीमन्मयश्चकया
लीवस्तुष्टुय ॥ ॐ ह्रीं गद्यनूदा
ध्वजवायुदिगिर्महिना ॥ ॐ ह्रीं म
नुदेवस्तुवर्तिगृद्धस्तुममदा ॥
ॐ ह्रीं मयतिष्ठारुव ॥ ॐ ह्रीं नयं ॥
॥ जयस्तु ॥ ॐ ह्रीं अयश्चस्तुवन ॥
अगमश्चदि ॥ ॐ ह्रीं वायवदावर्ति ॥
गमस्तु ॥ ॐ ह्रीं नदावर्ति ॥ ॥
ॐ ह्रीं ध्वजार्कवृद्धाय नमः ॥ न्यासा

ध्वजार्कवृद्धाय ॥ ॐ ह्रीं मानुषाय ॥ ॐ ह्रीं
वृद्धिदात्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं वायव ॥
ॐ ह्रीं त्रिष्टु ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं न
यतिष्ठारुमायस्तुर्व ॥ ॐ ह्रीं
नयनमः ॥ ॥ आवाहन ॥ ॥ नय
हि सर्वश्च न सिद्धसंघे ॥ ॐ ह्रीं लखः
दामध्वजसाध ॥ ॐ ह्रीं नयस्तु
नयस्तु सिद्धिगृहायुजास्तुवनम
स्तु ॥ ॐ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं नयस्तु
विष्टुलवास्तुध्वजार्क ॥ ॐ ह्रीं नय
दात्राय नमः ॥ ॐ ह्रीं नयस्तु
ॐ ह्रीं नयस्तु ॥ ॥ ॐ ह्रीं ॥ सर्ववि
धाधियादव ह्रीं नयस्तु ॥ ॐ ह्रीं नय
॥ ॐ ह्रीं नयस्तु ॥ ॐ ह्रीं नयस्तु
नमः ॥ ॐ ह्रीं उद्यवदायनमः
॥ ॐ ह्रीं गद्यनयनमः ॥ ॐ ह्रीं गद्य
नांवा ॥ ॐ ह्रीं मनस्येनमः ॥ ॐ ह्रीं
वाकान ॥ ॐ ह्रीं महालक्ष्मी नमः ॥ ॐ ह्रीं
ध्वज ॥ ॐ ह्रीं यल्लव ॥ ॐ ह्रीं अस्मायस्तु
॥ ॐ ह्रीं अश्वस्तुयथा ॥ ॐ ह्रीं मयतिष्ठ
जायनमः ॥ ॐ ह्रीं अस्माकमिन्द्र ॥ ॐ
ह्रीं विष्टुलाय नमः ॥ ॐ ह्रीं वृद्धस्य ते
वृद्धि ॥ ॐ ह्रीं गमया ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं नय
नमः ॥ ॐ ह्रीं गद्यदात्रना ॥ ॐ ह्रीं ॥

गत उद्ध दाना चैर्न ॥ उं क्रो व वृक्षाय
 नमः ॥ न्यामा यया ययुजा ॥ उं श्रीः
 नायुधिविना ॥ उं क्रो श्रीर्न दानाय
 नमः ॥ उं दाना देवी ॥ उं क्रो द्रदिता
 नमः ॥ यनमः ॥ उं वत्ता विष्टुः ॥
 उं क्रो क्रो उद्धाय कमलुल रुसाय
 स्वर्गी धियनयनमः ॥ आवाहनं
 ॥ ५ क्रो विष्णु धियनमूनी नुला
 कनमा द्ययि नुद वता रिः ॥ सर्वस्य
 धागा द्यमि नयरा वा विष्णु ध्वनः ॥
 मग ननमः ॥ ध्यानं ॥ यीनं यीनं
 वरुणा द्य वाक्मानं वरुणा ननं ॥
 सयानं व विज्ञानं दधुः ॥ ध्रुवः
 मधुलं ॥ उं वक्ष्य यज्ञानं ॥ श्रीः ॥
 उं यद्यथा निश्चय मूर्ति मूर्द्धन
 निवासितः ॥ सुद्विकर्मात्मका नित्यं
 तस्मै वक्ष्यन्त मास्तुते ॥ उं क्रो गणयत
 यनमः ॥ उं गणनीता ॥ उं क्रो स
 प्रसन्नो नमः ॥ उं यावकान ॥ उं क्रो
 मरालक्ष्मी नमः ॥ उं श्रीष्टुते ॥ य
 ल्लवः ॥ उं श्रीष्टु यत्रा ॥ यता का ॥
 उं क्रो धाताय नमः ॥ उं श्रीष्टु कमि
 न्य ॥ उं क्रो यथाय द्य ॥ उं वरुणाय
 नमः ॥ उं क्रो वः
 वाय द्य ॥ उं गश्च दाना ॥ दूर्वा ॥ उं क्रो

० उं क्रो ४ श्रीष्टु यरुद्र ॥ ५

४ श्रीष्टु यरुद्र ॥ उं क्रो मुक्ता मुक्त ॥ स
 र्वय ॥ उं क्रो केववाय द्य ॥ उं श्रीः
 दाय ॥ श्रीः ॥ उं क्रो केववाय द्य ॥ उं
 वक्रा द्य नं ॥ वक्रा ॥ उं क्रो ४ श्रीष्टु यरुद्र
 ॥ उं श्रीः ज विष्टु द्य ॥ वन्दना दिवलि
 ॥ उं उद्ध दाना ययवधु कयुः ॥
 रं ववा ॥ वद कयु याला यथा गि
 नीगल मीष्टि नाः ॥ तसर्व सुनुद वयथा
 वलि गृह्णु मे सदा ॥ उं क्रो श्रीष्टु यति
 क्षारुव ॥ उं यत यनु ॥ जय श्रीः ॥
 उं श्रीष्टु यरुद्र ॥ श्रीष्टु गश्च दि ॥ ॥
 रं गि उद्ध दाना चैर्न ॥ ॥

गताम लु यम (ध्वनिः) न उद्ध ययुजय ०
 ॥ उं क्रो क्रो द्य वक्ष्य धियने यवक्ष्य (ध
 नमः ॥ उं वक्ष्य यज्ञानं ॥ उं दिवत्सय
 नया रं धमत्य स्या यिदि नमूखै ॥ यामा
 वायु नूय ॥ श्रीष्टु वरुद्र ॥ उं क्रो श्रीष्टु य
 दाय नमः ॥ ध्यानं ॥ उं वरुण मूर्खं व
 रुणा द्य लं व कृष्ण मरु द्य ॥ वक्ष्य नं
 मुनिनं कृष्ण कृष्ण मरु द्य ॥ यि
 क्षार्क सोम नूयं व माफ नीया यवीन
 की ॥ कृष्ण जिने नग र्क (ध्वनिः) जिने
 व वास मी ॥ श्रीष्टु माला धर्तं गस्या दधु
 म्वा द्य दि (ध्वनिः) क व वक्ष्य वं कमलुलं वा
 भग कि सा द्य द्य नथ ॥ रं सा नूटः

कठकं वा आगयत्तु समन्विता गाय
 गीशु वमाविशी मृषी नत्ता श्वथाम्थ
 । उठिलाल म्ब कूचांश्च वृद्ध नृपांश्च
 वाममान् । विकवक्ता किकुकींश्च
 साक्षमाला कमलु लून ॥ वद ॥ ॐ
 आवर्द्ध वाक्क्ष ॥ म्भारं ॥ ॐ वरु
 ध्वद ममायुका गाय शादि समन्वि
 तः । वक्त्र नृपा मरुतामा व नमस्कृता
 न नृपिन ॥ मूलन युजा ॥ ॐ द्रोः श्री
 यलुद्रु रुद्र अस्मा य रुद्र ॥ नवमले
 द युजन ॥ ॐ द्रोः अस्मा य रुद्र ॥ नि
 रुज ॥ ॐ य वृक्ष वृक्ष विजला ॥ य
 लव ॥ ॐ द्रुः अस्मा य रुद्र ॥ ॐ अश्व
 सुयनः ॥ म्भुग ॥ मूर्ध ॥ ॐ द्रुः अ
 स्मा य रुद्र ॥ ॐ नक्षो रुद्रम् ॥ नक्षो
 ॥ ॐ द्रुः अस्मा य रुद्र ॥ ॐ त्रज वि
 रुद्रा ॥ यताका ॥ ॐ द्रोः युजा यत
 यनमः ॥ ॐ अस्मा कमिन्द्र ॥ ॐ द्रोः
 सुयनिष्ठा रुव ॥ ॐ यत्ना मूवा मित्र
 नृक्षस्य याज्ञं यनत्वा वक्ष्मा सविना
 मूर्कनः । अतस्य याज्ञी मूर्कनस्य ला
 कं विष्ठीत्वा मरुयत्वा दधमि ॥ ॐ म
 नाक्षु निः ॥ अयम्भारं ॥ ॐ जेला कः
 यानिरुगानि स्मावना निवना निव

। वक्त्र विष्णु निवेः ॥ सार्द्धं वक्ष्मा कूर्च
 नुतानि वे ॥ ॐ न्या शाला कया लांश्च
 जयाद्या दानव वताः । नमर्ध सलु
 वक्त्र न्यामा दार्द्धय युजय ॥ अ
 श्वरुद्रम् ॥ अश्वगन्धो दि ॥ ॥
 ॐ निमलुघम (अयुजा विधिः ॥

गतः कल (गर्भं नग (अदक इन्द्र
 सर्वे ययुनय ॥ ॐ सर्वममूद्राः सनि
 तस्मीर्ध निजल दानवाः । आया लुय
 जमानस्य द विगच्छय का नवी ॥ ॥
 ॐ ॐ मभर्ग (गय मून ॥ सर्वगन्धगः
 अश्व कयश्च नत्वा दी न निधाय ॥ ॥
 ॐ ग (अव यमने वे वणा दा वली स
 नखगी । नृमय सिधू का वनी जले इ
 मि ननि (धरुव ॥ ॥

गता दान युजा न कल लय मने ॥ यज
 ननाक्षु वद्धनी गृहीत्वा अविच्छिन्नय
 या धात्री मूला चार्थः ॥ लकि कल लान
 ममिने निव कर्म गृहीत्वा ला कया ला
 र्क्ष्मा वय ॥ यदक्षि ल कर्म दानम
 य ॥ ॐ शाला कया ला सायु धा मन
 दारु वता । नक्षार्थ मने की रं धा वया
 नतश्चत्री । आचार्यो वा वयं त्या वी स
 व विष्णु निवा वधी । नाथ मरु ध्वत्री
 यूकं ययं कर्म समान रं ॥ यासाद

कियत नृणां यावत्कालं कृतं मम ॥
 वाक् ॥ ॐ यत्कर्मैकं धर्मं यद्विद्यानां
 धर्मं मनायव । यूर्यं समाह्वयेत्तु मन्त्र
 दत्तुमिवाह्वया ॥ मूलमर्तु ॥ ॐ नृणां
 रुतं ॥ ॐ नित्यं नृणां यत्तु मन्त्रं ॥ यत्कर्म
 मिव कलनं वामे न किं कलनं मया
 यत् ॥ यत्तु मन्त्रं ॥ यत्तु नृणां विष्णु न
 र्त्तु ॥

तन० निवलिक्कि कल० धर्मेन ॥ मूल
मङ्गलान्तरं ॥ आध्यात्मिकं यथार्थं
कामनं ॥ आध्यात्मिकं ॥ मूलमेकं
यथाश्रुतिं ॥ वद ॥ ॐ नमो भगवते ॥
ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥
नमो ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ नमो भगवते ॥

नमोऽर्घ्याय गृहीत्वा पूर्वकलशमव
थ ॥ ॐ क्रानन्दिने नमः ॥ ॐ क्रामहा
कालाय नमः ॥ ॐ क्रयाथे नमः ॥ ॐ
विजयाथे नमः ॥ ॐ क्रालं न्याय
नमः ॥ श्रीं ॥ जलावतगजाचूडं
मवर्षुकिनीतिनी। सरुम्रनयनं
कंदक्रयाभिर्विरावयं ॥ ॐ गंगा
त्रमिन्द ॥ श्रीं ॥ ॐ न्यूसूत्रयतिः
एववक्ररुक्मामहावलं। सर्वय
क्षाधियाथवराकवाजनमाश्रुते ॥
मृगश्रदि ॥ ॐ न्यूसूत्रयतिः ॥

नमोऽग्रेऽग्रे यद्वा नार्चनं ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं (नयाय नमः) ॥ ध्यानं ॥ ॐ स
 फाद्विद्य ॐ विशाखमश्रुमालाकमधु
 लं । द्वालीमालाकलं नकं गकिरुसंः
 चुगासनी ॥ वद ॥ ॐ अग्निर्मूर्धादिव ॥
 स्मार्गं ॥ ॐ सर्वत आमयादवा नकव
 (ह्रीं मरुद्विनिः) चुगासना गकिरु
 संवग्निदवनभासुते ॥ अणगश्वादि
 ॥ ॐ नमोऽग्रे यद्वा नार्चनं ॥ ॥

[illegible]

ततो नमस्तुभ्यं नमः॥
 उँ द्राने अग्नये नमः॥ ध्यानं॥ सर्व
 ते जाधिया देवा निरर्पति नीललोहि
 तः। मरुता वृषा जनि र्णो नस्ते निर्भग
 येनमः॥ वेद॥ उँ यन्ने देवी निर्भ॥

ॐ नमः ॥ निमित्तं यमं ननु कुरु ॥ सर्वत्र
काधियामरुतं । खड्गं रुद्रं कामरुतं वीर्यं
सुमीनिर्भनयनमः ॥ अरुगश्वादि ॥
ॐ निनेमस्य द्वात्राचने ॥ ॥

तगः यश्चिमद्वात्राचने ॥ ॥
ॐ द्वावृषायनमः ॥ ॐ द्वाकन्यायनमः
॥ ॐ धर्मो नमः ॥ ॐ विष्णु नमः ॥ ॐ
द्वावनूषायनमः ॥ ध्यानं ॥ ॐ नक्रिया
नधत्रादवामकनरुमरुतवलनि
मगः ॥ पुन्रनूयश्च नमः सुवनूषायन
॥ वेद ॥ ॐ मम ॥ ॐ नमः ॥ वनूषः सक
लाविष्णुः ॥ यून्यानि मगधियः ॥ याग
रुद्रमरुतं वा रुद्रं सुमीनिर्भनमानमः
॥ अरुगश्वादि ॥ ॐ नियश्चिमद्वात्रा
चने ॥ ॥

ततावायवाद्वात्राचने ॥ ॐ द्वावायवे
नमः ॥ ध्यानं ॥ ॐ सर्वथाधियादे
वः सर्वत्र नुचवस्मिन्तः ॥ धजुरुद्रं
मद्यवर्धं सुमीनिर्भनमानमः ॥ वे
द ॥ ॐ नववायु ॥ ॐ नमः ॥ वायुसुस
वेवर्धयः ॥ सर्वगश्च वरुः ॥ पुत्रिः ॥ य
नूषा ॥ धजुरुद्रं सुमीनिर्भनमान
मः ॥ अरुगश्वादि ॥ ॐ निवायवाद्वा
त्राचने ॥ ॥

ततामत्रद्वात्राचने ॥ ॥

ॐ द्वादेवो नमः ॥ ॐ द्वावृषायनमः
॥ ॐ विष्णु नमः ॥ ॐ द्वाय
लायनमः ॥ ॐ द्वाकन्यायनमः ॥
ध्यानं ॥ सर्वत्र नक्रियमः ॥ यः ॥ सामात्रा
जावावस्मिन्तः ॥ पुन्रनूयश्च नमः ॥ वेद ॥ ॐ कवि
दंगजगवः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
सोमः ॥ सर्वथाधियममन्त्रितः ॥ नक्रिया
धियनिः ॥ साम सुमीनिर्भनमानमः ॥
अरुगश्वादि ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

ततर्णी नमः ॥ ॐ द्वावृषायनमः
नायनमः ॥ ध्यानं ॥ सर्वदवाधियादे
वर्णी नमः ॥ पुन्रनूयश्च नमः ॥ वेद ॥ ॐ नमः ॥
ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
नूषः ॥ पुन्रनूयश्च नमः ॥ सर्वविष्णुधिया मरु
तः ॥ पुन्रनूयश्च नमः ॥ सुमीनिर्भनमानमः ॥
अरुगश्वादि ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

तताः ॥ द्वात्राचने ॥ ॐ द्वावृषायन
मः ॥ ध्यानं ॥ यत्राधियनिर्भनमान
नामधूमकः ॥ यागालवसतिर्निर्भनमान
नक्रियनमानमः ॥ वेद ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
ॐ नमः ॥ यासावनक्रनूयश्च नमः ॥ ॐ नमः ॥

सवत्राचरी। यूथवदात्रयमृद्धित
मनिर्यनमानमः॥ अगगश्वादि ॥
ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥

तताद्वैदात्राचरी ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥
॥ ध्यानं ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ यथा
निजगद्गुरु। आवाहमियक्तुः ॥ स्मिन्मृ
दयं यतिगृह्णतां ॥ वद ॥ ॐ वदयं यति
न ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ यत्नागकुसुमाकात्रावसा
वेवाहमृगधृक्। सर्वलोकयतिशेष
समीनिर्यनमानमः॥ अगगश्वादि
॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥

ततावायव्यस्ययुर्वगलयतिमव्यय ॥
आवाहनादिध्यानं ॥ गजवर्कमहाय
ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ नागयक्तुः यतीना
सं ध्यायद्वैदात्राचरी ॥ ॐ गलया
गलयतिशेष ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ गजवर्कमहा
दीनं मूलमादकयातिनं। सर्वविद्यु
निवात्र ॥ गगनायुषनमाशुत ॥ अग
गश्वादि ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥

ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ गगनायुषनमाशुत ॥
॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ ध्यानं ॥ कृकृमा
वर्कमं कागमकृमालासूयसुके।
ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ गगनायुषनमाशुत ॥
रावथ ॥ वद ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥

ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ गगनायुषनमाशुत ॥
॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ ध्यानं ॥ कृकृमा
वर्कमं कागमकृमालासूयसुके।
ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ गगनायुषनमाशुत ॥
रावथ ॥ वद ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥

ततानेसुखस्ययुर्वथागिनीकलश
चनं ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ ध्यानं
॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ महायती सर्वजकृद
संयुता। निमलस्ययुर्वथागिनी
ध्यायते सदा ॥ वद ॥ ॐ वदयं मवम
तिश्रमेकर्मवमलिकि ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥
ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ मयक्तुः नकल्यनी ॥ ॐ
ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ विद्युमदकनीदवीथागि
ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ अगगश्वादि ॥
ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ कलशचनं ॥

ततावायव्यस्यदक्षि ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥
कलशचनं ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ यथा
नमः॥ ध्यानं ॥ ॐ वदयं यतिगके
ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ गलावर्कम
पूरवर्कमं गिधूलवकयातिनं ॥
वद ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥ ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥
सनसमासुयवायव्यस्यववामक
। यलयासुदसंकागं कृगयालन
माशुत ॥ अगगश्वादि ॥
ॐ ह्यद्वैदात्राचरी ॥

यष्टिमम्याकत्रवा मुकलल्लभचने ॥
आवा रुनादि ॥ उं द्रा वं वा मु शानम
॥ ध्यानं ॥ उं यी वं वं वं वं वं वं
वृकं कजामनं । रुम यानं व वि या ध
मद्रमाला कम धुलं ॥ उं आवमन
॥ मारं ॥ उं यी वं वं मद्रा दीयं वं
उवा दं सु (भरुनं । यूयं वा द्यसु
गुश्च वा मु व द्यन नमो मुन ॥ अण
गश्चादि ॥ वं नि वा मु कल ल्लभचने ॥

नमः यष्टिमम्यादिकि (ल मुकल
ल्लभचने ॥ आवा रुनादि ॥ उं द्रा वं
मुमूर्त्तय नमः ॥ ध्यानं ॥ उं वं रुला
स्या वि सा ला द्वा मद्रा मासू यो वनी
। रुम व वं रु सें मद्रा व यी ना न न य द्य
धना । वा नू स वी रु सें यू धी दि वारु प
धरु धिता । मद्रा द द्य के प्र य द्वा वा
म धी रु ल सें यू ना ॥ वद ॥ उं नमः
नूय ॥ मारं ॥ उं अ (ध द्वा व मु ना
य वी रु म व वं सू यो वनी । वि द्यु धः
निक त्री यू धी ल व मु मूर्त्ति न मा मद्र
॥ अण गश्चादि ॥ वं ल्य मु कल ल्लभचने

वृण ल्लभन स्य यष्टिमम्यादिकि कयष्टि रु
कल ल्लभचने ॥ उं द्रा वं ध्यानं नि का ये नम
॥ उं द्रा वं का ये नमः ॥ ध्यानं ॥ उं ना ज

स्यलद्युतिमूर्त्तगद्रावक्राद्य तनूथ
। मं यून श्रु मद्रा ल्य व वं स द (नी ॥
गुरु ॥ यू क मा रु म द्यो मु य ल या न
ल वि द्य मद्रा अण म नं वि रु ध्या य ल
मूर्त्त स्या मि नः मद्रा ॥ वद ॥ उं द्रा वं
नि ॥ ॥ उं द्रा वं द्यिका ये नमः ॥ ध्या
नं ॥ उं नि नं वं वं वं वं वं वं वं
नू म धि ते । वा द्य व म्मा व वं वी दं ना
ग न्धा न सि रु धि ते । नि नू लं वा द्य मा
ल श्रु वि या ध न्द द्यि (ल के वं । क या
लं कृ णि का म यो या ग मद्रा क व द्य
। क या न्मृ यं ज यं द वं मृ यं वा ग वि ना
नं ॥ वद ॥ उं गूं वं कं य जाम रु ॥
मारं ॥ म वं वि द्य रु न न्द वं ध नि नू
य न मा मु न ॥ यू द्यि कं वा द्य यं नि र्यं
मृ यं ज य न मा मु न ॥ अण गश्चादि
॥ वं नि धानि क यष्टि क कल ल्लभ
चने ॥

उयादिकलल्लभचने ॥ उं द्रा वं द्रा वं
वें य ॥ कल ल्लभ शानमः ॥
उं अदि यु कल ल्लभ ॥

नगामृयं जयकलल्लभचने ॥ उं द्रा वं
यं ज या ये नमः ॥ ध्यानं ॥ उं वृ य मि
द सि नं द वं दि म क न्द न्द म् नि रं । व

कावर्क विनेश्वरवर्क के जेमह
नी। विगुला क धनन्द वं व गदल
न धाविर्क वाभासुसं हि तादे ॥ दि
कुजा कल धाव नो ॥ हे मा रु व ॥
संगी ॥ धनी व न विरु विना ॥ न वा मु
ती धन धाय नमर्व पा य य ॥ धनी ॥
वद ॥ ॐ शुं व कं य जा महे ॥ २ ॥
ॐ अमृती नमहे धाय वि ॥ ३ ॥
मनाय वा य वा य न धनू या य नम
रु य ला च न ॥ अरु ग धादि ॥
ॐ निमृखं जय कल धा च न ॥

गत आदित्य कल धा च न ॥ ॐ क
आदित्या य नमः ॥ धा न ॥ ॐ व
कय धम मा सी न स फा ध व धा
रु न ॥ व क व धु म न जी र्ग क धि म
क स म य र्ग ॥ व का र्ग म म र्ग ॥
मना ला कु क व द र्ग ॥ व व वि क य
न र्ग न ॥ सर्व पा य य धा न ॥ ॐ व ॥
ॐ आरु ध न न ज मा ॥ ३ ॥ ॐ
न मा नमः ॥ म रु यो ॥ आ दि सा य
न मा नमः ॥ न मा वि ध य वा धा य न
मा या जि म् जि म् व ॥ अ र ग धा दि
॥ ॐ आ दि स कल धा च न ॥
न मा ना ग ना जा च न ॥ ॐ क व

वृक्ष य नमः ॥ धा न ॥ ना ग ना
ध न र्ग व न नो य धि वि वि र्ग
॥ ३ ॥ ॐ धा य ध न र्ग म क ना
स न ॥ अ न मा वा मू की ग र्ग ॥ ४ ॥
को र्ग व म न ॥ य र्ग ॥ य म ॥ धे व म रु
य र्ग ॥ १ ॥ खा या ला दि कू लि क ॥
व द ॥ ॐ व न धा र्ग र्ग न ॥ ३ ॥
ॐ ना ग ना जा च न ॥ न र्ग ज ल ना जा
म रु व र्ग ॥ नि ध न ॥ धि वि वि र्ग ना
ग ना ज न मा म् रु न ॥ अ र ग धा दि ॥
ॐ नि म् व न ना ग ना जा च न ॥

न मा य क य र्ग धी यू जा ॥ ॐ क व
का य नमः ॥ धा न ॥ म रु व र्ग व
ॐ व र्ग म रु दि क ॥ य र्ग का टि की व
वि वा ना य र्ग म र्ग न म र्ग व र्ग ॥ म रु
व र्ग व म य र्ग न य र्ग व र्ग न न र्ग ॥
ॐ अ र्ग अ र्ग व र्ग दि न ॥ ॐ अ र्ग
ॐ नमः ॥ धा न ॥ य र्ग धी य र्ग क
ना रि ॥ य वि वा वि र्ग वि र्ग ॥ म रु
रा धा नमः ॥ का य र्ग व र्ग य सि दि
दा ॥ ॐ अ र्ग व र्ग ॥ ३ ॥ य
ॐ क र्ग न ॥ म रु ना सी य र्ग धी स
रु र्ग य र्ग ॥ सर्व वि र्ग व र्ग र्ग
न मा मि य र्ग य र्ग ॥ अ र ग धा

दि॥ ॐ नमो यद्वा यद्वासी यद्वासी ॥ ॥

गगन ४ श्रीलक्ष्मीयुजनै ॥ ॐ श्रीप्रिय
 नमः ॥ ध्यानै ॥ ॐ यद्वा यन्निष्कृतादि
 वीनीलान्त्यलदलयरा ॥ सिद्धनय
 मरुत्तायकानिमीरुनसंस्थिता ॥
 वंद ॥ ॐ श्रीधवलक्ष्मी ॥ ॐ क्रीं दी ल
 क्ष्मी नमः ॥ ध्यानै ॥ ॐ यद्वा मनसि
 दवीगुह्यशुद्धिकर्मनिष्ठा ॥ अकुदः
 र्वावकायधनधान्यवन्नयदा ॥
 ॐ यावकानै ॥ स्मार्तै ॥ श्रीलक्ष्मीदेव
 दवीचमर्चमंयन्निदायिनी ॥ भव
 कामयदादवीनमस्तुत्यां नमान
 मः ॥ अंगगन्धदि ॥ ॐ निश्रीलक्ष्मी
 दयार्चनै ॥

गताऽयं लिङ्गवर्धनं ॥ ध्यानं ॥ का
 वयं कामयन्ति नानिर्वसर्वे कुरु
 शिवा वक्राहो वापि ते ददमाऽन
 यमुचनं ध्वनं ॥ ॐ कालं सदा जाता
 य नमः ॥ ॐ सदा जाता ॥ ॐ वं वाम
 दवाय नमः ॥ ॐ वाम सदा मा वि ॥
 ॐ दू नं अक्षा वाय नमः ॥ ॐ या ते न
 द ॥ ॐ दू नं तत्पु न्नाय नमः ॥ ॐ य
 त्पु न्नाय दधू ॥ ॐ दू नं वीणा ना
 य नमः ॥ ॐ ते मीणा नं ॥ यन्मनादि

वर्णिजयस्मरणे ॥ हिमकन्दनिरंक्ष
वर्गगादूढन्दुधानिर्वा ॥ सर्वपापह
नयेववन्द्यहं यत्रमंनिर्व ॥ अरुग
श्वादि ॥ ॐ नि ॥ गमयति गच्छते ॥

[illegible]

गनः निवर्णकि कलभश्चन ॥ ॥
 अधात्रमूलमकुण्ड न्यासः ॥ अध्या
 यात्रयूजा ॥ अध्यानाद्यष्टयष्टिका

सुनै॥ क्रां द्रयाय नमः॥ ॐ स्वादिख
जगत्तु योजा॥ ॐ क्रां वृषासनाय न
मः॥ ॐ क्रां मिहामनाय नमः
॥ ध्यानै॥ सूर्यकाटियनी काष्ठीय
लयाम्बुदनिःस्रवनी। शुकना। गाय
त्री नमः॥ चतुर्वर्कं चतुर्कुंडं च दीप
दणनं ध्यानं दीपकं समं मुहूर्तं
। नमि मूत्रं नमूलासि हस्तं च न्याद्वं
धनं। रुगलिंगसमाया। गविदध्या
लिंगमूद्रया। अंगुष्ठं नमः। हस्तं
। द्वादशमूलाय नमः। चतुर्धनं मूक
यमं कंथं त्रायो मूढिना वदनी स्युः
। नमः। कंठाय नमः। चतुर्थं क्लान्त
मंसमर्थय॥ ॥ अथवा॥ ॐ वृष
सिंहं नमि स्वादि॥ ॐ निवाय न
मः॥ ॐ याद्वं नमः॥ ॐ विष्णु वन
मः॥ ॐ लक्ष्मी नमः॥ ॐ ईश्वर
नमः। नमः। कथं अस्माय नमः॥ ॐ ई
श्वरं सूर्यमं भुलादि यं च मं भुलास
नाय नमः॥ मूलमं कुक्षं ग्यां जलि
॥ ॐ क्रां वामाय नमः॥ ॐ क्रां उक्ष
यै नमः॥ ॐ क्रां त्रयो नमः॥ ॐ क्रां का
ल्यै नमः॥ ॐ क्रां कलविकलनाय
नमः॥ ॐ क्रां वलविकलनाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दक्षिणरुक्मनमूर्ध्ववक्त्रामूलकल
द्वयात्रगुष्ठाग्रस्य ॥ ७ ॥ वाक् ॥ ॐ
ॐ उमायै रुक्मनू (स्त्री) लिंगत्रयधनाय
वा ॥ लीकत्राय नमः सुखं रुक्मनू ग्रह
कात्रक ॥ कर्मांजलिं वक्षीः कानखनं
ध्यात्रये ॥ वाक् ॥ ॐ यथेष्टं कृणुय
तेन रुक्मवतमखमन्दिनी ॥ वक्षीय
जगन्नाथ सर्वो धर्मवर्धनया ॥ ॥
समर्थो वाक् ॥ ॐ यत्कृत्वा स्यात्पुण्यं
हि मुक्तिं प्रकाशयन् ॥ १ ॥ नमः सर्वज्ञान
खरुहि गुरुभयत्रमं ॥ मूलक
॥ १ ॥ निधाय ॥ ॥ स्वं ध्यायन् कउघ
यमन ॥ कृणुय ३ ॥ ॥ ॐ निःकानख
रुविधानं ॥ ॥

ततो मूलाच्चाय आर्क्ष्याथ ॥ यथे
ष्टं कृणुय तेन आर्क्ष्यां दीयतां यशः ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं कया लाग्रुगलरुयगा
द्यावदवीरममसा सुसा दक्षः पूनर्दः
लुकिमनरुलदा देवदेवी यमना
॥ नानाविद्ययुक्ता नमो ममद्विग
यसामनुमूदा विलायानुवेतसर्व
कमनुगुत्रुगलरुवतां यत्कृत्वा यत्कृ
मनु ॥ चउर्दिद्रायुर्ध्वं कृयन् ॥ ॥

वायव्यगलयति पूजयेत् ॥ ॐ गल
नीत्वा ॥ ॥ ततः ४ क्रमाद्यर्थं लक्रम
मलुलपूजने ॥ यजमाने कृत्वा विमादा

रुने ॥ ॥ आचार्यः ४ कृष्णमिर्कं गंवा
सर्वान्वाक्कृष्णं नरिवाद्यथ ॥ व
क्षीं जलिनाक्षीं प्रार्थयेत् ॥ ॐ अग्न्यद
क्षयश्चैव सामवेदत्वथर्वणागुत्रु
साधकः ॐ नर्दं मयतां सगर्तमम
क्रिया कर्मविधानं च सत्यविक्रम
यत्कृते ॥ सिंहासनसमात्रां कथा
मिगुत्रुं कृत्वा नमामि यूष्मान् ॥
गेत्राक्षीं ददतः सत्वरं ॥ सर्वं वाक्
॥ ४ ॥ यतिवचनं ॥ ॐ समात्रा रुय ॥
गुत्रु नमः कान ॥ ॥

ततो न्यासः ॥ रुक्मलुद्धि द्याम्याम ॥
मारुका न्यासः ॥ खर्गं न्यासी कुर्या
॥ ॐ रुद्रं अस्माय रुद्रं ॥ कत्र ॥ धनं
॥ ॐ ईं सः दद्याय नमः ॥ ॐ ह्रीं नि
जसत्तादा ॥ ॐ ह्रीं निखाये वमद ॥
ॐ ह्रीं कवचाय ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं नयय
यवीषद ॥ ॐ रुद्रं अस्माय रुद्रं ॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं नाय उद्धवकाय नमः ॥
ॐ यं गत्य नृषा ययुर्ववकाय नमः ॥
ॐ नृषा नाय दक्षिणवकाय नमः ॥
ॐ वं वामदेवाय उद्धवकाय नमः ॥
ॐ लं सद्या जाताय यश्चिमकाय नमः
॥ ॥ ॐ निवर्कं न्यासः ॥ अर्घ्या ग्यु
जा ॥ ॐ आयं दीन कृष्णं गिदधि

सवि ६ मगलु नी । तिल सिद्धि र्थ के च
 व अर्थ पावे यदा यथे ॥ ॥
 गन ६ कुलु स्या यने ॥ उं द्रा द्य दया य
 नम ॥ उं अग्नि मग्नी रु विम रिम द्य
 रु व लु । वि द्य कि रु य वा रु न यु नु पि
 य ॥ ॥ मुख ला रि स्या यने ॥ उं द्राः
 क व वा य दू ॥ उं न ज म मू य वा य ठ
 सू य र्ग य न वा य ग । अ स्या थ य र्ग का
 थ ग र्ग मा थ रि न ४ य मा न् ॥ ॥
 कुलु स्या ल र्ग न ॥ उं द्रा क व वा य दू
 ॥ उं अग्नि यू वी रि वि रि रि रि रि नू न
 न नू न । स द वा य रु वि स्थ नि ॥ ॥
 ॐ ति कुलु स्या ल र्ग न ॥ ॥

कुलु स्या यू र्ग न का । (६) सा यान यू ज
 न ॥ उं द्रा रु लो का य गा य र्ग नू न्य अ
 गि द्य व गा य न म ॥ उं रु व लो का य
 उ धि क रु न्दा वा य द्य व गा य न म ॥
 ॥ उं द्रा रु लो का य अ नू र्ग यू न्दा अ
 दि स्थ दे व गा य न म ॥ उं द्रा म रु लो
 का य व रु स्य गि रु न्दा व रु स्य गि दे व
 गा य न म ॥ उं द्रा ज न ला का य र्ग कि
 रु न्दा व नू र्ग दे व गा य न म ॥ उं द्रा
 ग य लो का य र्ग यू न्दा ॐ न्दा दे व
 गा य न म ॥ उं द्रा स रु लो का य जः
 ग मी रु न्दा वि स्थ दे व दे व गा य न म

॥ उं द्रा (६) म मा य न म ॥ उं द्रा रु न द्रा
 जा य न म ॥ उं द्रा वि स्थ मि गु य न म ॥
 ॥ उं द्रा ज म द्य मू थ न म ॥ उं द्रा व मि
 रु य न म ॥ उं द्रा का रु य य न म ॥
 उं द्रा म म र्ग य न म ॥ उं द्रा मि र्ग म गि
 रि ॥ उं न म र्ग रु वा य व ॥ (६) म यो नि
 ग यू ज ॥ ॥ सा यान वा रु न ॥ उं द्रा
 वा रि नू गा ॥ य य यु दान ॥ ॥ य रु
 र्ग रा व नि जी रु र्ग ॥ उं द्रा डा य धी मा म
 उं न म ॥ र्ग क व ना वा य धा य ॥ ग न ६
 कुलु स मी र्ग ग ला अग्नि कुलु अ रु द
 न र्ग र्ग ॥ नि जी रु र्ग ॥ उं द्रा द्य दया
 य न म ॥ व द ॥ उं द्रा मि ला वि रु थ
 द व स वि ग य दि ला म य म सो जा य रु
 ॥ थ व वि रु थि रु थ द या य रु र्ग वि रु
 यु व न मा वि स र्ग ॥ १ ॥ सि व न ॥ उं द्रा
 ४ अ रु य रु र्ग ॥ उं द्रा दि रु ॥ २ ॥ रा
 उ न ॥ उं द्रा ४ अ रु य रु र्ग ॥ ३ ॥ अ रु
 रु र्ग ॥ उं द्रा क व वा य दू ॥ ४ ॥ ख न
 न ॥ उं द्रा ४ अ रु य रु र्ग ॥ य नि स मू
 रु न क रु न ॥ ५ ॥ उं द्रा दे वा द वा ॥
 ॥ वा य ॥ उं द्रा रि वा ये व य द ॥ ६ ॥
 यू र्ग ॥ उं द्रा द्य दया य न म ॥ ७ ॥
 स मी क र्ग ॥ उं द्रा नि व स रु र्ग ॥
 ८ ॥ ॥ अ रु रु र्ग ॥ उं द्रा क व वा य दू
 ॥ ९ ॥ कू ट न ॥ उं द्रा ४ अ रु य रु र्ग ॥

[illegible][illegible]

सुग्रीव
महाबाहू
रुद्रिह्वमठ

1824

[illegible]

[illegible]

ॐ स्वस्ति युष्मै यनित्रस स्वाहा ॥
 ॐ उनिष्ठय नूषाय निखायेव
 षट् ॥ ॐ धूमवो यिन कवचाय
 दू ॥ ॐ सयुजिष्ठाय ननगयाय
 योषट् ॥ ॐ धनूद्वजाय अर्क्य
 रुट् ॥ ॐ त्र्यम्बो नमः ॥ ॥ निव
 सि ॥ वा ॥ गवन्दसनमः
 ॥ वामा ॥ ॥ ॐ अग्नयमाय
 द्वाये नमः ॥ वामयो ॥ ॐ अ
 ग्नयदवावाहनाय नमः ॥ वाम
 कर्षा ॥ ॐ अग्नय अ ॥ ॐ अयनाय
 नमः ॥ लि ॥ गो ॥ ॐ अग्नये वे ॥ अ
 नाय नमः ॥ दक्ष के ॥ ॐ अग्न
 यको मा ज न ऊ स नमः ॥ दक्षि
 या ॥ ॐ अग्नय विश्वमखाय न
 मः ॥ दक्षी ॥ ॐ अग्नय देव
 मखाय नमः ॥ ॐ ति न्यो मः ॥ ॥
 ॐ वे ॥ अग्नय विद्महे अग्नन्ता
 विध्वधामहि ॥ तन्ना वद्वि ॥ यथा
 दया आ न्यस ॥ मूलमकुटापूज
 यथा ॥ ॐ द्वा ना नी नू वद्वि वगता
 यनमः ॥ ॥ वरु ॥ सी ॥ का ॥ न ॥ ॥
 ॐ द्रु ॥ अ ॥ सु ॥ का ॥ य ॥ रु ॥ ॥ गा ॥ रु ॥ नी ॥
 न ॥ द्वा ॥ ॐ द्वा ॥ क ॥ व ॥ यो ॥ य ॥ दू ॥ ॥ अ ॥ व

महा॥ उ० वदयज्ञानं ॥ यदीगुयू
जनं ॥ उ० का० अ० शानुम० ॥ उ० का०
यदीतायनम० ॥ उ० का० वनूष
यनम० ॥ उ० का० विष्णुवेनम० ॥
उ० का० अ० यीयनथनम० ॥ उ० गी
विपदा ॥ ॥ उ० आ० ब० द० न० वाः
अ० ॥ क० दु० द० दि० ॥ वनालय
मावकाषे दयमदिननवद
सुयनं ॥ ॥ उ० विष्णुनराठम
मि ॥ उ० क० न० य० गीतसुयनं ॥
यु० वि० कि० मु० क० व० द० य० वीन
यु० ज० न० ॥ उ० न० मा० इ० मु० नी० ल० याः
वाय ॥ अ० मि० यु० ज० न० ॥ ॥ उ०
का० अ० मा० य० रु० ॥ उ० क० या० नः
वि० य० अ० रु० व० ॥ क० ॥ क० नः
दि० दि० वि० दि० द्रु० य० नि० सु० न० ॥
अ० थ० क० ल० ॥ च० न० ॥ मू० ल० क० ज
य० ॥ न० मा० म० ॥ आ० ध० वा० दिः
अ० रु० य० वि० का० म० न० ॥ ध० माः
दि० ॥ मू० ल० म० न० ग० या० ज० लि
३ ॥ उ० का० नि० वा० य० न० म० ॥
उ० न० म० ॥ रु० वा० य० व० ॥ उ० का०
न० क० य० न० म० ॥ उ० अ० म० अ० मि

क० ॥ अ० ग० म० आ० दि० ॥ ॥ न० ता
न० न० दा० दि० दि० रा० दा० न० य० डा ॥
उ० का० न० दि० न० म० ॥ उ० का० म० दा





























































